

क्या चाहता हूँ ??

ना वसंत, ना सर्द, ना बरसात चाहता हूँ {25}
नही स्वर्ण से सज्जित सुंदर पात चाहता हूँ {24}

दिल के मुखड़े पर तेरा, शृंगार चाहता हूँ {25}
हर धड़क में बस तेरी झंकार चाहता हूँ {25}

लुटा पूर्ण तुझपर सकूँ, अभिमान चाहता हूँ {25}
दो नयन में हो तेरे सम्मान चाहता हूँ {25}

प्रेम के सागर में सादर स्नान चाहता हूँ {25}
तेरी खातिर जो फिदा वह जान चाहता हूँ {25}

शांत होती धड़कनों, में प्राण चाहता हूँ {24}
जो चीर नैनन के लगें, वो बाण चाहता हूँ {25}

कर सकूँ हर पल तेरा बस ध्यान चाहता हूँ {25}
मैं प्रेम का मंदिर नहीं, भगवान चाहता हूँ {25}

दो घड़ी क्यों ना सही, एक साथ चाहता हूँ {25}
उन कुसुम हाथों में अपना हाथ चाहता हूँ {25}

सूखे बंजर इन करो में, जान चाहता हूँ {25}
तेरे जल आशय से अमृत पान चाहता हूँ {25}

तेरे तन के हर कणों, का स्पर्श चाहता हूँ {25}
मेरे मन घर तू करे, हर अंश चाहता हूँ {25}

कह सकूँ तुझको मेरे, हालात चाहता हूँ {25}
तेरे मुख तेरे सुनूँ जज़्बात चाहता हूँ {24}

इस सुख जीवन पर शिथिल, बरसात चाहता हूँ {25}
हर बूंद में तेरा नशा दिन रात चाहता हूँ {26}

-सत्यम तिवारी